



Tibetan Buddhist Resource Center

Text Scan Input Form - Title Page

Work:	W4CZ58510	ImageGroup:	I4CZ58822
LCCN:	n/a	ISBN:	n/a

Title:	གསེར་འོད་དམ་པ་མདོ་སྡེའི་དབང་པོའི་རྒྱལ་པོ། gser 'od dam pa mdo sde'i dbang po'i rgyal po/
Author:	n/a
Descriptor:	copy made available from the collection of gomar gar at rebgong
Original Publication:	n/a;n/a
Place:	reb gong
Publisher:	rka sar 'dus bzang chos gling /
Date:	[n.d.]
Volume:	1
Total Volumes:	1
TBRC Pages:	2
Introductory Pages:	n/a
Text Pages:	n/a
Scanning Information:	Scanned at Tibetan Buddhist Resource Center, 1430 Massachusetts Avenue, Cambridge, MA 02138 US. Comments: MS work 15

Handwritten text in a rectangular frame, likely a title or label, written in a cursive script. The text is partially obscured by a dark, irregular stain or ink blot.



ཨྱེ། བཅའ་པོ་དང་པོ། འདས་པ་དང་། མཐུན་པ་དང་། དམུར་
 བུང་བའི་ས་དང་། བུང་ཆུ་མའི་ས་དང་། ས་མའི་ས་དང་།
 དང་། ས་མའི་ས་དང་། ས་མའི་ས་དང་། ས་མའི་ས་དང་། ས་མའི་ས་དང་།



[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

三

4

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[The following text is highly degraded and largely illegible due to extreme blurring and noise.]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

299

॥ इति श्रीमद्भगवत्पुस्तके श्रीकृष्णार्जसंवादे श्रीअर्जुनस्य धर्मयोगो नाम त्रयोविंशोऽध्यायः ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

[Faint handwritten text, likely bleed-through from the reverse side.]

[illegible]

२-अथ कदाचिदप्युक्तं तस्मै श्रुत्वा भगवतः प्रहसन्नि स्मृतं तदा

1871

[illegible]

[illegible]

[illegible]

(The following text is extremely faint and largely illegible due to fading or bleed-through from another page.)

20

卷之五

[illegible]

[illegible]

294

[The following text is a highly degraded scan of a manuscript page, likely from a Sanskrit or Indic script. It consists of approximately 10 horizontal lines of dense, cursive handwriting. The ink is dark, and the background is light-colored paper. Due to significant degradation, the specific characters are largely illegible, appearing as a series of connected strokes and loops. The text appears to be a continuous passage, possibly a prayer or a philosophical statement, given the context of the surrounding pages which contain religious or scholarly content.]

四

卷之四

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐ। इति श्रीमद्भगवद्गीतायां अष्टादशोऽध्यायः समाप्तः ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之五

2007

३॥ कृष्णसिंहा

[illegible]

सर्वकारस्य कृपायाः

पञ्चमः

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ वासुदेवाय नमः ॥

འཕྲིན་ལྷོ་རྒྱ་གཞི་བཟང་པོས།

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

पुष्पक

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

卷一百一十五

१०३४

১৯৩৬

[illegible]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

पुस्तकालय

1945年12月16日

[illegible]

345

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

平陽府志

THE

16-18

[illegible]

२०१३

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

1940

प्राप्तं नृणां कर्मफलं तदा

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

11/11/11

~~पुस्तकालय~~

...

1944-1945

18

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之五

24

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

平定縣志

22

[illegible]

[illegible]

[illegible]

199

[illegible]

[illegible]

191

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

五

257

[illegible]

[illegible]

卷之五

232

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之五

4

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥
 अथ श्रीभक्तप्रसादपञ्चिकायां प्रथमाध्याये
 प्रथमस्कन्धे प्रथमोऽष्टाश्लोकः ॥
 १ ॥ श्रीकृष्णाय नमः ॥ त्वत्पादाब्जं दृष्ट्वा
 मम हृदि निवेद्य मे कुरु चरणारविन्दम् ॥
 २ ॥ त्वत्पादाब्जं दृष्ट्वा मम हृदि निवेद्य
 मे कुरु चरणारविन्दम् ॥ ३ ॥ त्वत्पादाब्जं
 दृष्ट्वा मम हृदि निवेद्य मे कुरु चरणारविन्दम् ॥
 ४ ॥ त्वत्पादाब्जं दृष्ट्वा मम हृदि निवेद्य
 मे कुरु चरणारविन्दम् ॥ ५ ॥ त्वत्पादाब्जं
 दृष्ट्वा मम हृदि निवेद्य मे कुरु चरणारविन्दम् ॥
 ६ ॥ त्वत्पादाब्जं दृष्ट्वा मम हृदि निवेद्य
 मे कुरु चरणारविन्दम् ॥ ७ ॥ त्वत्पादाब्जं
 दृष्ट्वा मम हृदि निवेद्य मे कुरु चरणारविन्दम् ॥
 ८ ॥ त्वत्पादाब्जं दृष्ट्वा मम हृदि निवेद्य
 मे कुरु चरणारविन्दम् ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之四

[illegible]

[illegible]

[The following text is extremely faint and largely illegible due to fading or damage.]

長江

卷之四

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[The following text is highly degraded and illegible due to extreme blurring and noise.]

[illegible]

299

[illegible]

[illegible]

五

人

[illegible]

[The following text is extremely faded and largely illegible due to extreme fading and bleed-through from the reverse side.]

[illegible]

[illegible]

晏公

五十五

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

2014

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ।
अर्जुन उवाच । पाशेभ्यः शरीरेष्वपि कुरुपातकानामहम्
बन्धनमुत्तम । तेषां ह्यहं बन्धनानि विनाशयेयम् ।
उवाच । धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।
काँक्षन्ति मामेव गच्छस्व मम पटुपदाः ।

[illegible]

卷之四

1897

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[The following text is extremely faint and largely illegible due to fading and bleed-through from the reverse side. It appears to be a continuation of a historical or administrative document.]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय । ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय । ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय । ह्रीं क्लीं नमो भगवते वासुदेवाय ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[The following text is extremely faint and largely illegible due to low contrast and blurring.]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之五

24

७७। श्रीगणेशाय नमः । इति श्रीगणेशाय नमः । इति श्रीगणेशाय नमः । इति श्रीगणेशाय नमः । इति श्रीगणेशाय नमः ।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之五

495

[illegible]

[The following text is extremely faded and illegible due to poor scan quality. It appears to be a continuous passage of handwritten Indic script.]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之五

[illegible]

~~ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ।~~

[illegible]

[The following text is extremely faded and largely illegible due to poor scan quality.]

三

卷之四

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे श्रीकृष्ण उवाच ॥ धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ॥ मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय ॥ १ ॥
अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदो वीर्यवान् ॥ २ ॥
अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदो वीर्यवान् ॥ ३ ॥
अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदो वीर्यवान् ॥ ४ ॥
अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदो वीर्यवान् ॥ ५ ॥
अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदो वीर्यवान् ॥ ६ ॥
अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदो वीर्यवान् ॥ ७ ॥
अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदो वीर्यवान् ॥ ८ ॥
अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदो वीर्यवान् ॥ ९ ॥
अर्जुन उवाच ॥ द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदो वीर्यवान् द्रुपदो वीर्यवान् ॥ १० ॥

[illegible]

[illegible]

5010205

43

卷之四

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[The text in this block is extremely faded and illegible due to poor scan quality.]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

五



324/61

[illegible]

[illegible]

[illegible]

五

100

272

[illegible]

~~(Illegible handwritten text)~~

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Handwritten text in a single line across the page, written in a cursive script. The text is enclosed within a rectangular border.

[illegible]

[illegible]

245



2157

[illegible]

[illegible]

卷之五



金

[illegible]

[illegible]

五

4

444

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷八



21056

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । इति श्रीकृष्णार्जुनसंवासे अष्टाध्यायी नामाष्टके षष्ठ्यध्याये ॥
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः । मामकाः पाण्डवाश्चैतानि सैन्यनिबन्धनम् ॥
 द्रुपद उवाच ॥ पाण्डवस्य त्वं ह्यर्जुन शूराग्रज ॥ वीर्यवान् बलवान् प्रह्लादाद्युपासीत ॥
 भीमार्जुनसमा युधि । युयुत्विककुन्तिभोजः ॥ द्रुपदभीमार्जुनसमा युधि ॥ युयुत्सवः विक्रान्त ॥
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः । मामकाः पाण्डवाश्चैतानि सैन्यनिबन्धनम् ॥
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः । मामकाः पाण्डवाश्चैतानि सैन्यनिबन्धनम् ॥
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः । मामकाः पाण्डवाश्चैतानि सैन्यनिबन्धनम् ॥
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः । मामकाः पाण्डवाश्चैतानि सैन्यनिबन्धनम् ॥
 धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः । मामकाः पाण्डवाश्चैतानि सैन्यनिबन्धनम् ॥

[illegible]

[illegible]

○



五、

[illegible]

[illegible]

291

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । अथ श्रीकृष्णार्जुनसंवादे ।
अर्जुन उवाच । धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवाः
काश्चित्पुंगवाः पांडवप्रभृतयः शूरा महेष्वाहाः ।
उत्तमास्त्रधराः क्षेमः पराक्रमी द्रुपदपुत्रवानुजः ।
विशामाकर्ष्यमाणस्तथा वीर्यवानिन्द्रजित् ।
भीमार्जुनसहोदरौ भीमार्जुनसहोदरौ ।
अर्जुन उवाच । त्वं मे ब्रूहि यत्किंचिच्छ्रेयसाय वै ।
यत्किंचिद्धर्मोऽस्ति सत्यं च त्वं मे ब्रूहि हि ।
अथैतान्पुंगवान्पश्यन्निद्रां गच्छति पुरा ।
अथैतान्पुंगवान्पश्यन्निद्रां गच्छति पुरा ।
अथैतान्पुंगवान्पश्यन्निद्रां गच्छति पुरा ।

[illegible]

[illegible]

小兒驚風



三

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

॥ ५५ ॥
॥ ५६ ॥
॥ ५७ ॥
॥ ५८ ॥
॥ ५९ ॥
॥ ६० ॥
॥ ६१ ॥
॥ ६२ ॥
॥ ६३ ॥
॥ ६४ ॥
॥ ६५ ॥
॥ ६६ ॥
॥ ६७ ॥
॥ ६८ ॥
॥ ६९ ॥
॥ ७० ॥
॥ ७१ ॥
॥ ७२ ॥
॥ ७३ ॥
॥ ७४ ॥
॥ ७५ ॥
॥ ७६ ॥
॥ ७७ ॥
॥ ७८ ॥
॥ ७९ ॥
॥ ८० ॥
॥ ८१ ॥
॥ ८२ ॥
॥ ८३ ॥
॥ ८४ ॥
॥ ८५ ॥
॥ ८६ ॥
॥ ८७ ॥
॥ ८८ ॥
॥ ८९ ॥
॥ ९० ॥
॥ ९१ ॥
॥ ९२ ॥
॥ ९३ ॥
॥ ९४ ॥
॥ ९५ ॥
॥ ९६ ॥
॥ ९७ ॥
॥ ९८ ॥
॥ ९९ ॥
॥ १०० ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १ ॥ देवयानं नृपयानं विष्णुयानं ब्रह्मयानम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥ देवयानं नृपयानं विष्णुयानं ब्रह्मयानम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३ ॥ देवयानं नृपयानं विष्णुयानं ब्रह्मयानम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ४ ॥ देवयानं नृपयानं विष्णुयानं ब्रह्मयानम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ५ ॥ देवयानं नृपयानं विष्णुयानं ब्रह्मयानम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ६ ॥ देवयानं नृपयानं विष्णुयानं ब्रह्मयानम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ७ ॥ देवयानं नृपयानं विष्णुयानं ब्रह्मयानम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ८ ॥ देवयानं नृपयानं विष्णुयानं ब्रह्मयानम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ९ ॥ देवयानं नृपयानं विष्णुयानं ब्रह्मयानम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ १० ॥ देवयानं नृपयानं विष्णुयानं ब्रह्मयानम् ॥

Handwritten text in a cursive script, likely a historical document or manuscript. The text is written in a dark ink on aged, yellowed paper. The script is dense and fills most of the page, with some lines appearing slightly faded or obscured by ink bleed-through from the reverse side. The text is organized into approximately 10 horizontal lines, with some variations in line length and spacing. The overall appearance is that of a well-preserved but aged piece of historical writing.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[The following text is written in a cursive script, likely Indic or Persian, and appears to be bleed-through from the reverse side of the page.]

Handwritten text in a cursive script, likely a manuscript page. The text is written in a single column, filling most of the page. The script is dense and appears to be a form of shorthand or a specific dialect. The page is aged and shows signs of wear, including discoloration and some fading of the ink. The text is enclosed within a simple rectangular border.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

卷之五



卷之六

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

Handwritten text in a vertical column on the right margin, likely a title or index.

Main body of handwritten text in a cursive script, organized into approximately 10 horizontal lines. The script is dense and characteristic of historical South Asian manuscripts.

Handwritten text in a cursive script, likely a historical document or manuscript. The text is written in a dark ink on aged, slightly discolored paper. The script is dense and fills most of the page, with some lines appearing slightly faded or obscured by shadows. The text is organized into several horizontal lines, suggesting a structured format or a list of items. The overall appearance is that of a well-preserved but aged historical record.

[illegible]

[illegible]

[illegible]



1612

970332

1965

卷之六

2000

[illegible]

166
 167
 168
 169
 170
 171
 172
 173
 174
 175
 176
 177
 178
 179
 180
 181
 182
 183
 184
 185
 186
 187
 188
 189
 190
 191
 192
 193
 194
 195
 196
 197
 198
 199
 200
 201
 202
 203
 204
 205
 206
 207
 208
 209
 210
 211
 212
 213
 214
 215
 216
 217
 218
 219
 220
 221
 222
 223
 224
 225
 226
 227
 228
 229
 230
 231
 232
 233
 234
 235
 236
 237
 238
 239
 240
 241
 242
 243
 244
 245
 246
 247
 248
 249
 250
 251
 252
 253
 254
 255
 256
 257
 258
 259
 260
 261
 262
 263
 264
 265
 266
 267
 268
 269
 270
 271
 272
 273
 274
 275
 276
 277
 278
 279
 280
 281
 282
 283
 284
 285
 286
 287
 288
 289
 290
 291
 292
 293
 294
 295
 296
 297
 298
 299
 300
 301
 302
 303
 304
 305
 306
 307
 308
 309
 310
 311
 312
 313
 314
 315
 316
 317
 318
 319
 320
 321
 322
 323
 324
 325
 326
 327
 328
 329
 330
 331
 332
 333
 334
 335
 336
 337
 338
 339
 340
 341
 342
 343
 344
 345
 346
 347
 348
 349
 350
 351
 352
 353
 354
 355
 356
 357
 358
 359
 360
 361
 362
 363
 364
 365
 366
 367
 368
 369
 370
 371
 372
 373
 374
 375
 376
 377
 378
 379
 380
 381
 382
 383
 384
 385
 386
 387
 388
 389
 390
 391
 392
 393
 394
 395
 396
 397
 398
 399
 400
 401
 402
 403
 404
 405
 406
 407
 408
 409
 410
 411
 412
 413
 414
 415
 416
 417
 418
 419
 420
 421
 422
 423
 424
 425
 426
 427
 428
 429
 430
 431
 432
 433
 434
 435
 436
 437
 438
 439
 440
 441
 442
 443
 444
 445
 446
 447
 448
 449
 450
 451
 452
 453
 454
 455
 456
 457
 458
 459
 460
 461
 462
 463
 464
 465
 466
 467
 468
 469
 470
 471
 472
 473
 474
 475
 476
 477
 478
 479
 480
 481
 482
 483
 484
 485
 486
 487
 488
 489
 490
 491
 492
 493
 494
 495
 496
 497
 498
 499
 500
 501
 502
 503
 504
 505
 506
 507
 508
 509
 510
 511
 512
 513
 514
 515
 516
 517
 518
 519
 520
 521
 522
 523
 524
 525
 526
 527
 528
 529
 530
 531
 532
 533
 534
 535
 536
 537
 538
 539
 540
 541
 542
 543
 544
 545
 546
 547
 548
 549
 550
 551
 552
 553
 554
 555
 556
 557
 558
 559
 560
 561
 562
 563
 564
 565
 566
 567
 568
 569
 570
 571
 572
 573
 574
 575
 576
 577
 578
 579
 580
 581
 582
 583
 584
 585
 586
 587
 588
 589
 590
 591
 592
 593
 594
 595
 596
 597
 598
 599
 600
 601
 602
 603
 604
 605
 606
 607
 608
 609
 610
 611
 612
 613
 614
 615
 616
 617
 618
 619
 620
 621
 622
 623
 624
 625
 626
 627
 628
 629
 630
 631
 632
 633
 634
 635
 636
 637
 638
 639
 640
 641
 642
 643
 644
 645
 646
 647
 648
 649
 650
 651
 652
 653
 654
 655
 656
 657
 658
 659
 660
 661
 662
 663
 664
 665
 666
 667
 668
 669
 670
 671
 672
 673
 674
 675
 676
 677

Handwritten text in a cursive script, likely a manuscript page. The text is written in a dark ink on aged, slightly discolored paper. The script is dense and fills most of the page, with some lines showing signs of fading or wear. The text appears to be in a historical or religious context, possibly a liturgical book or a historical record. The handwriting is consistent throughout, suggesting a single scribe. The page is framed by a simple border, and there are some small marks and stains, particularly along the right edge, indicating its age.

五

494

2

[illegible]

[The text in this image is extremely faint and illegible due to significant fading or damage.]

[illegible]

[illegible]

長江



53

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

是

5

金

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

अथैवम्

अथैवम्

अथैवम्

अथैवम्

अथैवम्

अथैवम्

अथैवम्

अथैवम्

अथैवम्

अथैवम्

अथैवम्

अथैवम्

अथैवम्

अथैवम्

अथैवम्

अथैवम्

अथैवम्

अथैवम्

अथैवम्

अथैवम्

अथैवम्

अथैवम्

अथैवम्

अथैवम्

अथैवम्

अथैवम्

अथैवम्

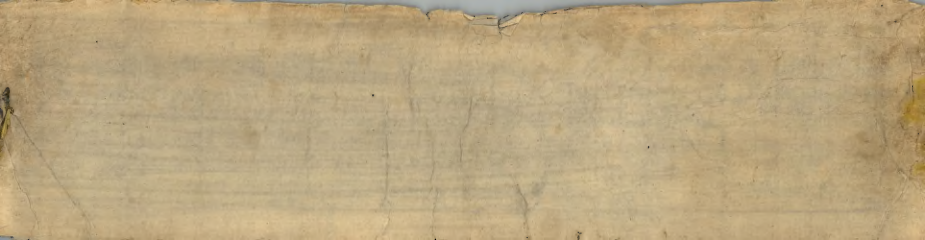
अथैवम्

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]





1

